ग्रेटर नोएडा। "परमात्म प्यार अनुभूति महोत्सव" के उद्घाटन अवसर पर डॉ.बृजेश कुमार,रिटायर्ड फर्स्ट सी.ई.ओ. ऑफ ग्रेटर नोएडा तथा उनकी धर्मपत्नी रेखा। साथ हैं ब्र.कु.आशा,ओ.आर.सी., ब्र.कु.उषा, ब्र.कु.अमृता तथा अन्य।

नवसारी-गुज.। बी.जे.पी. महिला मोर्चा द्वारा 'नारी गौरव सम्मान' कार्यक्रम में महिला मोर्चा प्रमुख श्रीमती चेतना बिरला ब्र.कु. गीता को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित करते हुए। मंचासीन हैं नगरपालिका प्रमुख हेमलता चौहाण, जिला पंचायत प्रमुख शीला पटेल, नगर सेवक सहित अन्य सम्मानित महिलायें।

वार्शी-महा.। महाशिवरात्रि पर ध्वजारोहण के बाद ईश्वरीय स्मृति में मोहन भाई, के.गव्हाणे,लोकमत के पत्रकार, विनोद बुडूख,अध्यक्ष लायन्स क्लब, प्रकाश महामुनी,अध्यक्ष लायन्स क्लब, तेजस वखारिया,अध्यक्ष रोटरी क्लब, ब्र.कु.संगीता, वर्षा खांडवीकर,अध्यक्षा लायन्स क्लब, ब्र.कु.राणी, ब्र.कु. महादेवी, ब्र.कु.वैजीनाथ तथा अन्य।

सोहेला-संबलपुर(ओडिशा)। शिवरात्रि "आर्ट ऑफ पॉज़ीटिव थिंकिंग" विषय पर आयोजित कार्यक्रम में जीतेन्द्रीय प्रधान,ब्लॉक एजुकेशन ऑफिसर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.पारबती।

गदरवाड़ा-म.प्र.। शिवरात्रि के उपलक्ष्य में 'एक शाम शिव पिता के नाम' कार्यक्रम में शिवरात्रि की शुभकामनाएं देते हुए विधायक गोविंद सिंह पटेल। साथ हैं ब्र.कु.प्रीति तथा अन्य।

राउरकेला-ओडिशा। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर हुए कार्यक्रम के पश्चात् यातायात मंत्री सुब्रत तराई को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.विमला।

परमात्म मिलन का अनुभव

शास्त्रों व वेदों की गुत्थियाँ पुनः जीवंत होते देखा...।

जैसे श्रीमद्भागवद्गीता के लिए कहा जाता है कि स्वयं भगवान के श्रीमुख से उच्चारा गया इसके अलावा और कोई शास्त्र नहीं है वैसे ही मधुबन ऐसा स्थान है जहाँ साक्षात परमात्मा अपने बच्चों से मिलन मनाने आता है। यहाँ जो चल रहा है वो पूरे विश्व में कहीं और नहीं। यहाँ आते ही व्यक्ति पवित्र हो जाता है। मन में पवित्र भावना ही उत्पन्न होती है। यह कहना है डॉ.सुरेन्द्र मोहन मिश्रा, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, भारतीय दर्शन आचार्य,संस्कृत विभाग का जो कि दिव्य परमात्म मिलन के पश्चात् ओम शान्ति मीडिया से रूबरू हुए। वार्तालाप के कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत हैं:

प्र: आप ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पर्क में कैसे आए?

1981 में मैं गीता जयन्ती मेले, जो कि कुरुक्षेत्र में लगता था, के ज़रिए संस्था के संपर्क में आया। तब मुझे गीता के भगवान के बारे में नई जानकारी मिली। मैं बचपन से ही गीता का अभ्यासी था तो इस संस्था में दिया जा रहा व्याख्यान मुझे आधुनिक लगा। ऐसा लगा कि इस प्रकार की गीता व्याख्या समाज में फैली कुरीतियों को दूर कर सकती है। अभी तो मैं इस मार्ग में जैसे प्राइमरी का विद्यार्थी हूँ।

प्र: आप माउण्ट आबू में स्वयं परमात्मा से रूबरू हुए, आपको कैसा लगा?

मैं तो उसी मुख्य उद्देश्य से यहाँ आया था कि शिव बाबा को देखूँ, जानूँ, पहचानूँ। उनकी अमृत वाणी को सुनूँ। यह मेरा स्वप्न साकार हुआ। जब मैं उनको देख रहा था, सुन रहा था तो उनकी सरल शब्दावली के माध्यम से मुझे बहुत सारी गुत्थियाँ, शास्त्रों व वेदों के वाक्य ऐसे प्रतीत हुए मानो वे पुनः जीवंत हो उठे अथवा नए अर्थ को प्राप्त हुए। इस युग परिवर्तन के समय दुनिया को जिस प्रकार की वाणी की आवश्यकता है, जहाँ मनुष्य मात्र का ध्यान जाना चाहिए उसे नज़र में रखते हुए, सभी बच्चों के कल्याण के लिए परमधाम निवासी शिव बाबा ने जो बातें बताईं वे अपने आप में विशाल हैं। जैसे श्रीमद्भागवद्गीता के लिए कहा जाता है कि स्वयं भगवान के श्रीमुख से उच्चारा गया इसके अलावा और कोई शास्त्र नहीं है वैसे ही मधुबन ऐसा स्थान है जहाँ साक्षात परमात्मा अपने बच्चों से मिलन मनाने आता है। यहाँ जो चल रहा है वो पूरे विश्व में कहीं और नहीं। यहाँ आते ही व्यक्ति पवित्र हो जाता है। मन में पवित्र भावना ही उत्पन्न होती है।

देश-विदेश में गीता पर जितनी व्याख्याएं हुईं वे अपने प्रसंग में ठीक हो सकती हैं। गीता का वास्तविक मर्म यदा यदा हि धर्मस्य... इसी श्लोक में है। गीता का समय युगान्त का है, माना कलियुग का अंत। इस समय जब परमात्मा धरा पर आते हैं तो संगमयुग कहलाता है और फिर वे सतयुगी सृष्टि की स्थापना करते हैं। ब्रह्मा बाबा ने अपने जीवन में कदम-कदम पर इस बात की ओर ही इशारा किया। ब्रह्मा बाबा श्रीमद्भगवद्गीता की जीवंत प्रतिमूर्ति थे।

प्र: क्या आप समझते हैं कि परमात्मा की शिक्षा से ही परिवर्तन होगा तथा मनुष्य का दैवीकरण होगा?

आत्मा में ही दिव्यता, मनुष्यता एवं दानवता होती है। आज एक ओर समय है मनुष्यता को जगाने का तो वहीं दिव्यता को भी हमें जागृत करना होगा। इसके लिए स्वयं में निहित शक्तियों को पहचानना होगा तथा

परमात्मा शिव बाबा से जुड़कर उनसे भी शक्तियों को दृढ़ और पुष्ठ करना होगा। आज के समय लोग या तो मनुष्यता को मानने वाले हैं जैसे कि वैज्ञानिक इत्यादि। कुछ लोग हैं जो दानवता को बढ़ावा दे रहे हैं जिससे समाज में बहुत दुःख-दर्द बढ़ रहा है। अब शिव बाबा ने सिखाया है कि कैसे अपने गुणों का दैवीकरण करना है जिससे आदि सनातन देवी-देवता धर्म, जिसका वर्णन गीता में भी होता है, की स्थापना होगी।

प्र: गीता को सर्व शास्त्रमयी शिरोमणि कहा गया है। इस पर आपके क्या विचार हैं?

गीता का स्थान वेदों से भी ऊँचा माना गया है। और वेदों के अनुसार भी इस सृष्टि चक्र की पुनरावृत्ति होती रहती है और चारों युगों - सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग एवं कलयुग - से मनुष्य मात्र को गुज़रना ही पड़ता है। इन सभी गहरे राज़ों को शिव बाबा ने ब्रह्मा बाबा के श्रीमुख द्वारा सरलता से स्पष्ट किया है। उन्होंने बताया है कि यह सृष्टि-चक्र 5000 वर्ष का है। ब्रह्मा बाबा ने गीता के महावाक्यों को आम व्यक्ति के लिए स्पष्ट किया है। गीता की टीकाएं सभी के लिए समझना शायद कठिन हो लेकिन बाबा की मुरली हर कोई समझ सकता है।

मैं अधिकतर कुरुक्षेत्र को धर्मक्षेत्र कहना पसंद करता हूँ। समूची गीता का लक्ष्य कुरुक्षेत्र को धर्मक्षेत्र बनाना ही है। 13वें अध्याय के शुरुआत में बताया गया है कि यह हमारा देह ही कुरुक्षेत्र है। इसमें देह-अभिमान जुड़ा हुआ है। इसे ही धर्मक्षेत्र बनाना है। धर्म वह पवित्र कर्म है जिसके लिए गीता शास्त्र बना है।

तो यही तल्लीनता मुझे ब्रह्माकुमारीज़ के हर सेवाकेन्द्र में देखने को मिली। ऐसा कहीं और नहीं देखा मैंने। जितनी अंतर्ग्रस्तता मैंने यहाँ देखी ऐसी कहीं तभी हो सकती है जब आध्यात्मिक जागृति हो।

प्र:गीता में वर्णित युद्ध हिंसक है या अहिंसक?

गीता में स्वयं भगवान ने वर्ण-संकर (इसका सामान्य अर्थ जो कि स्त्री-पुरुष के संबंध से उत्पन्न संतान से है) के अर्थ को बिल्कुल ही क्रांतिकारी रूप में प्रस्तुत किया है। जब अर्जुन इस बात से विचलित होता है कि उसके युद्ध करने से कितनी हिंसा होगी इत्यादि तो भगवान कहते हैं कि वर्ण-संकर तब होगा जब तुम स्वधर्म, यानि आत्मा के गुण, उन्हें छोड़कर परधर्म, यानि देह के संबंधों में फँस जाओगे।

ठीक जैसे कोई रंगमंच पर अपना संवाद भूल जाए तो उसको पर्दे के पीछे से प्रेरित करने वाला कोई न कोई होता है वैसे ही 'अर्जुन' उस आत्मा का प्रतीक है जो अपने स्वधर्म को भूल गई है, विस्मृत हो गई है और भगवान उसे प्रेरित कर रहे हैं कि अपनी शक्तियों को पहचान देव-पद को प्राप्त करो।

तो 'अर्जुन' से हिंसक युद्ध किसी प्रकार भी हो ही नहीं सकता। वह तो आत्मा, परमात्मा से प्राप्त शक्तियों द्वारा, अपनी ही बुराइयों से 'लड़कर' उन पर जीत पाती है।

प्र: यहाँ की शिक्षाएं सुनकर आप आगे परमात्मा का संदेश जन-जन तक कैसे पहुँचाना चाहेंगे?

अब मेरा यही लक्ष्य है कि कुरुक्षेत्र में 'गीता और विश्व शांति' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करना है। मैं मानता हूँ कि यह एक ऐसा मंच है जिसके ज़रिए समस्त विश्व का कल्याण हो सकता है। इस दिशा में ब्रह्माकुमारीज़ संस्था जो कार्य कर रही है वह सराहनीय है। यह स्वयं परमात्मा का इशारा है और आज मानवता को इसी की ज़रूरत है।